स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रीयता-अभिमुखी शैक्षिक विचार

दिव्या सिंह

शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश

सार

स्वामी विवेकानन्द भारत के बहुमूल्य रत्न एक जीवित क्रांति के मिशाल थे, एक व्यक्ति नहीं एक चमत्कार थे। आज से एक सदी पहले पराधीन भारत में जिस एकाकी और अंकिचन योद्धा सन्यासी ने हजारों मील दूर विदेश में नितान्त अपरिचितों के बीच अपनी ओजमयी वाणी में भारतीय धर्म-साधना के चिरन्तन सत्य का जयघोष किया। अपने शारीरिक अस्तित्व की समाप्ति के बावजूद भी आप सम्पूर्ण विश्व के हृदय में बसे है। स्वामी जी ने सभी क्षेत्रों में उदारता एवं स्पष्टता का दृष्टिकोण प्रतिपादित किया। आधुनिकता के इस दौर में हमारे पुरातन विचार विलुप्त होते जा रहे हैं। वे विचार जिसने मानव चेतना को समझा और मानवता को जागृत किया, आज विस्मृत हो गये हैं। आज से 150 वर्ष पूर्व जन्म स्वामी विवेकानन्द ने उसे जीवित किया था।

आज के समाज में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। सफल शिक्षक ही सफल राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। आधुनिक समाज में संचार और संवाद का होना आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द जी की संचार दृष्टि आधुनिक समाज के सफल निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक आदर्श व्यक्तित्व होना चाहिए। अपने व्यक्तित्व से ही भारत राष्ट्र के महानायक के रूप में स्वामी जी ने सम्पूर्ण विश्व को अपना परिचय दिया। आज के समय में विवेकानन्द के इन विचारों का होना अति आवश्यक है। स्वामी जी के विचार सदियों तक युवकों को प्रेरित करते रहेगें। स्वामी विवेकानन्द जी ने समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षित किया। उन्होने युवकों को याद दिलाया-''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'' अर्थात तुम्हारा कर्म करने का अधिकार है फल का नहीं। उन्होंने कहा कभी निराशा को पास मत आने दो, निर्भय होकर जीवन संग्राम में कूद पड़ो। उन्होंने युवकों को प्रेरित किया और कहा, ''स्वाभिमानी बनो! अपने सामर्थ्य तथा बुद्धि का उपयोग अपने राष्ट्र और समाज के उत्थान में लगाओ। शिक्षित बनो! बलिष्ठ बनो! अपने पूर्वजों की शौर्य गाथाएँ याद रखो। वही तुम्हारा सम्बल है।''

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा जगत के लिए वास्तविक रूप सें उल्लेखनीय हैं। शिक्षा ही वास्तव में मनुष्य का निर्माण करती है। स्वामी जी का कथन था कि व्यक्ति स्वयं में पूर्ण है, परन्तु इसकी अभिव्यक्ति शिक्षा द्वारा होती है। शिक्षा आत्मा का संगीत है, उसकी मधुर ध्वनि से समग्र जीवन मधुमय हो जाता है।

शिक्षा अन्त:करण के ज्ञान को उद्भाषित करती है। शिक्षा ही मनुष्य में चरित्र का निर्माण करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य में आत्मविश्वास जगता है, शिक्षा ही बालक के हृदय में एकाग्रता का निर्माण करती है, शिक्षा ही बालक के अन्दर छिपी कलात्मक वृत्ति तथा विशेष अभिरुचि का विकास करती है। शिक्षा जीने की कला सिखाती है।

विवेकानन्द जी के शब्दों में ''हमें ऐसी शिक्षा ही आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो सके, जो मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ा सके, जो मानव की बुद्धि का विकास कर सके, जिसके आधार पर मनुष्य स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हो सकें।

स्वामी जी के शिक्षा दर्शन का अवलोकन हम निम्न बिन्दुओं के द्वारा कर सकते हैं-

नारी-शिक्षा :- स्वामी जी ने भारत वर्ष की सभी महिलाओं की शिक्षा तथा उनके सामाजिक विकास और उत्थान पर विशेष जोर दिया। उन्होंने अपने प्रवचनों में महिलाओं के उत्थान और कल्याण के लिए महिलाओं को आगे आने का निवेदन किया। इसी क्रम में मारग्रेट जैसी महिला आगे आयी और भगिनी निवेदिता के नाम से स्वामी जी के आह्वान पर महिलाओं के कल्याण में लग गई।

महिलाओं की शिक्षा तथा महिला समाज के पुनरुत्थान का कार्य स्वामी जी की दृष्टि में अति महत्व का था। इसी दृष्टि को घ्यान में रखकर उन्होंने स्त्री शिक्षा और स्वतन्त्रता पर विशेष घ्यान दिया। उनका कहना था कि भारतीय नारी अपनी समस्याओं का हल करने में स्वयं सक्षम है। हमारा कार्य उनको शिक्षित करना मात्र है। उन्होंने स्मरण दिलाया कि वैदिक काल में नारियों को पुरुषों के समान शिक्षा का अधिकार था, वहाँ स्त्री तथा पुरुष में कोई भेद नहीं किया गया।

भारत की नारी पवित्रता और त्याग की मूर्ति है उसके पास बल और शक्ति है। भारतीय महिला ही बालक की प्रथम गुरु है। महिला जिस प्रकार शिक्षित होगी बालक का भविष्य भी उसी प्रकार का होगा। नारी समाज का शिक्षित होना समाज के लिए सर्वाधिक्य उपयोगी है।

शारीरिक शिक्षा :- स्वामी जी का मानना था कि स्वस्थ शरीर ही सभी प्रकार के ज्ञान को समझने में सहायक है। इसलिए उन्होंने युवकों को गीता पढ़ने से पहले फुटबॉल खेलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा शरीर में तेजस्वी रक्त होने पर तुम श्रीकृष्ण की महान शक्ति और प्रतिभा को अधिक अच्छी तरह समझ सकोगे। जिस समय तुम्हें अपने पौरूष का भान होगा और उस समय तुम्हें गीता, उपनिषद् और आत्मा की महिमा अच्छी प्रकार से समझ आयेगी। फौलादी शरीर ही राष्ट्र की अप्रतिम शक्ति है। उसके लिए नित्य व्यायाम आवश्यक है। उनका मानना था कि विद्यालय में शारीरिक शिक्षा आवश्यक हो ताकि बालक शारीरिक और बौद्धिक, दोनों दृष्टि से बलवान हो सकें।

संस्कृत शिक्षा :- बालक की शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए परन्तु उसे संस्कृत की शिक्षा अवश्य देनी चाहिए। क्योंकि संस्कृत शब्दों की घ्वनि से ही राष्ट्र की प्रतिष्ठा शक्ति तीव्र होती है। स्वामी जी का मानना था कि यदि भारत को समझना है तो संस्कृत शिक्षण आवश्यक है। वेद, उपनिषद सब प्रकार के ज्ञान विज्ञान के आधार है। उनको समझने के लिए संस्कृत ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत व्याकरण सर्वाधिक वैज्ञानिक है। संस्कृत के उच्चारण से वाणी में शुद्धता आती है। वेदों के मन्त्रों से पर्यावरण शुद्ध होता है।

वेद मन्त्र की घ्वनि अनेक प्रकार के मानवीय विकारों का शमन करती है। संस्कृत से मन की पवित्रता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

स्वामी जी ने उपनिषदों का गहन अध्ययन किया और उसी के आधार पर विशिष्ट चिन्तन शक्ति का निर्माण हुआ। स्वामी जी के विचारों की व्यापकता का वर्णन असम्भव है परन्तु उनके विचारों का सार भारतीय जनमानस में समाया हुआ है। स्वामी जी ने समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षित किया। शिक्षकों के विषय में स्वामी जी ने कहा कि शिक्षक ही सच्चे गुरु हैं। शिक्षक की विशेषताओं के बारे में कहा-

1. उसे धर्म शास्त्र का ज्ञान हों।
2. उसका हृदय और मन पवित्र हो।

3. शिक्षक को व्यक्तिगत स्वार्थ से दूर रहना चाहिए।

स्वामी जी ने धनिक वर्ग को कहा कि उन्हें जो धन प्राप्त हुआ है उसे समाज सेवा में लगाएं। जनसाधारण की दरिद्रता को दूर करना सच्चे अर्थ में धन का उपयोग है तथा यही ईश्वर की पूजा भी है।

स्वामी जी की शिक्षा के समस्त बिन्दु समाज कल्याण और राष्ट्रोन्नति की दिशा में हैं, जो सदैव मनुष्य को प्रेरित करते रहेंगे। उनके विचारों के द्वारा समाज की संगठित शक्ति के माध्यम से अपने राष्ट्र को पुनः विश्वगुरु के सिंहासन पर आरूढ़ किया जा सकता है।

स्वामी जी ने देश के युवकों में प्रखर एवं विशुद्ध राष्ट्रीयता का निर्माण करने के लिए आह्वान किया और कहा-''आज सभी देवी-देवताओं की उपासना का परित्याग कर केवल भारत माँ की उपासना करो।''

स्वामी विवेकानन्द जी ऐसे परम्परागत व्यावसायिक तकनीकी शिक्षा शास्त्री थे, जिन्होंने शिक्षा का क्रमबद्ध सुनिश्चित विवरण दिया। वह मुख्यतः एक दार्शनिक, देशभक्त समाज सुधारक और दिव्यात्मा थे जिनका लक्ष्य अपने देश और समाज की सोयी हुई जनता को जगाना तथा उसे नव निर्माण के पथ पर अग्रसर करना था। शिक्षा दर्शन में स्वामी जी की तुलना विश्व के महानतम् शिक्षा शास्त्रियों प्लेटो, रूसो तथा रसेल से की जाती हैं क्योंकि उन्होंने शिक्षा के कुछ सिद्धान्त प्रस्तुत किये है जिनके आधार पर विशाल ज्ञान का भवन निर्माण तकनीकी आधार पर कर सकते हैं। स्वामी जी के शैक्षिक विचार भी उनकी वेदान्त विचारधारा से प्रेरित है। उनका मुख्य उद्देश्य मानव का नवनिर्माण था क्योंकि व्यक्ति समाज का मूल आधार है। व्यक्ति के सर्वांगीण उत्थान से ही समाज का सर्वांगीण उत्थान होता है और व्यक्ति के पतन से समाज का पतन होता है। स्वामी जी ने अपने शिक्षा दर्शन में व्यक्ति और समाज दोनों के समस्त संतुलित विकास को ही शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य माना। स्वामी जी के अनुसार वेदान्त दर्शन में प्रत्येक बालक में असीम ज्ञान और विकास की सम्भावना है परन्तु उसे इन शक्तियों का पता नहीं है। शिक्षा द्वारा उसे इनकी प्रतीत करायी जाती है तथा उनके उत्तरोत्तर विकास में छात्र की सहायता की जाती है। स्वामी जी वेदांती थे इसलिए वे मनुष्य को जन्म से पूर्ण मानते थे और पूर्णता की अभिव्यक्ति को शिक्षा कहते थे।

स्वामी जी के शब्दों में मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को व्यक्त करना ही शिक्षा है। स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा के विषय में कहते हैं कि सच्ची शिक्षा वह है, जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। शब्दों को केवल रटना मात्र नही है। 21वीं शताब्दी के बदलते परिवेश में जहाँ सूचना और प्रौद्योगिकी का युग चल रहा, वहाँ भारत की वर्तमान शिक्षा पद्धति महज उपलब्धियाँ वितरण करने के अतिरिक्त और कोई विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं की है वहाँ स्वामी जी के चिंतन को अपनाना आवश्यक है। स्वामी जी का मानना है कि भारत के पिछड़ेपन के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति उत्तरदायी है। यह शिक्षा न तो उत्तम जीवन जीने की तकनीक प्रदान करती है और न ही बुद्धि का नैसर्गिक विकास करने में सक्षम है। स्वामी जी ने आधुनिक शिक्षा पद्धति की आलोचना करते हुए लिखा- ऐसा प्रशिक्षण जो नकारात्मक पद्धति पर आधारित हो मृत्यु से भी बुरा है। स्वामी विवेकानन्द भारतीयों के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण से प्रभावित शिक्षा पद्धति को उचित नहीं मानते थे। वे शिक्षा की भारतीय पद्धति यानि गुरुकुल पद्धति को श्रेष्ठ मानते थे जिसमें

विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में निकटता के सम्बन्ध तथा सम्पर्क रह सके और विद्यार्थियों को श्रद्धा, पवित्रता, ज्ञान, धैर्य, विश्वास, विनम्रता, आदर आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास हो सकें। स्वामी जी भारतीय शिक्षा पाठ्यक्रम में दर्शनशास्त्र एवं धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन को भी आवश्यक मानते थे। वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो संकीर्ण मानसिकता तथा भेदभाव साम्प्रदायिकता दोषों से मुक्त हो।

स्वामी विवेकानन्द जी सच्चे वेदांती थे और सत्य के अनुपालन के समर्थक थे। उनकी दृष्टि में सत्य वही है जिससे व्यक्ति एवं समष्टि दोनो का हित हो उन्होंने प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति को जीवन के शाश्वत मूल्यों के रूप में स्वीकार किया।

निष्कर्षः

स्वामी विवेकानन्द जी के विचार, दर्शन और शिक्षा अत्यन्त उच्च कोटि के है। जीवन के मूल सत्य, रहस्य और तथ्य को समझने की कुंजी है। वे मानवता के सच्चे प्रतीक थे और मानव जाति के अस्तित्व को जनसाधारण तक पहुँचाने का अभूतपूर्व कार्य किया। वर्तमान में युवा पीढ़ी के लिए आवश्यक है कि वे अपने मूल संस्कृति से परिचित होंगे और नैतिक गुणों से भरपूर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाये रखे। आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति के आडम्बर में न फंसकर थोड़े दिनों के लिए बहुमूल्य जीवन का नाश न करें। स्वामी जी के आदर्श पर चलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ रहें और शिक्षा के मूल्य को समझें। गुरु को उचित आदर और सम्मान दें। भौतिकता की अंधी दौड़ में मौलिकता का त्याग न करें। शिक्षा जैसी पवित्र प्रकाश जो अज्ञानता के बंधन से मुक्ति दिलाती है और जीवन के दुःखों से छुड़ाकर सुखमय ज्योर्तिमय जीवन प्रदान करती है। ईश्वर एक है। हम सब उसी के संतान हैं, इसलिए मानव प्रेम को दिल में प्रथम स्थान दें। यह तभी संभव है जब हम सब स्वामी जी के बताए हुए मार्ग पर चलेंगे। संस्कृति देश की धरोहर व पहचान है, शिक्षा ज्योति है। धर्म मानव होने का प्रतीक है। इसलिए सांस्कृतिक चरित्रवान बनें व उत्तम गुणों से स्वयं को सजाएँ। शिक्षा के द्वारा देश के विकास को चरम पर ले जाए और सर्वधर्म के द्वारा सच्चे मानवता को अपनाकर ईश्वर की सेवा करें। तो आइये हम एक होकर शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय नवचेतना जगाएँ, नये समाज एवं नवयुग का निर्माण करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिन्तन : वेदान्त पब्लिकेशन।
2. सिंह, जगवीर (नवम्बर-जनवरी 2009): शोध समीक्षा और मूल्यांकन जोधपुर।
3. स्वामी विवेकानन्दः विश्व धर्म वेदान्त, वेदान्त केन्द्र प्रकाशन।
4. योद्धा संन्यासी विवेकानन्दः प्रकाशक-राजपाल एन्ड सन्स।
5. स्वामी विवेकानन्दः व्यक्ति और विचार-राधा पब्लिकेशन।